

- I. डॉ. कपिल तिवारी, संपदा ( म.प्र. की जनजातीय संस्कृति ) पृ 1- 10
- II. संपादक – लक्ष्मीनारायण गर्ग – लोक संगीत अंक, पृष्ठ संख्या - 99
- III. चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७३
- IV. उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्टूबर १९६०
- V. चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७४
- VI. उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्टूबर १९६०, पेज न.64
- VII. हिंदी मंदिरे, प्रेस प्रयाग सन १९२९ में प्रकाशित
- VIII. हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 6
- IX. चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७४
- X. पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ १३८
- XI. कविता- कौमुदी, भाग , पृ ४५
- XII. चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ. ९९
- XIII. वही पृ १०३-१०५
- XIV. अग्रवाल, रामभरोस, गोंड जाति का सामाजिक अध्ययन गोंड, संस्कृति, इतिहास , गोंडी पब्लिक ट्रस्ट, मंडला, पृ.182
- XV. वही 183
- XVI. वही 184
- XVII. वही 187
- XVIII. वही 188
- XIX. वही 191
- XX. वही 191
- XXI. डॉ. कपिल तिवारी, संपदा ( म.प्र. की जनजातीय संस्कृति परम्परा का साक्ष्य ) पृ ३७६
- XXII. उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्टूबर १९६०
- XXIII. Folk song of Mechel Hills introduction p.16
- XXIV. छत्तीसगढ़ी, लोकगीतों का परिचय, श्यामाचरण दुबे की भूमिका से उदत्त
- XXV. हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 8
- XXVI. वही पेज न 5
- XXVII. वही पेज 8
- XXVIII. हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 3
- XXIX. श्याम परमार : भारतीय लोक साहित्य, पृ. ३३

## तुलसी के राम

डॉ. निशा पटेल

(नेट-जे.आर.एफ.) अतिथि विद्वान (हिन्दी विभाग)  
अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

स्वामी रामानंद जी की शिष्य परंपरा के द्वारा एक के बड़े भाग में राम भक्ति की पुष्टि निरंतर होती आ रही थी। भक्त लोग फूटकल पदों में राम की महिमा गाते आ रहे थे, पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इस भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी की वाणी द्वारा स्फुटित हुआ। रामभक्ति का वह परम विषद साहित्यिक संदर्भ इन्हीं भक्ति शिरोमणि द्वारा संगठित हुआ जिसमें हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरंभ हुआ।

लोकधर्म और भक्तिसाधना को एक में सम्मिलित करके दिखाया उसी प्रकार कर्म ज्ञान और उपासना के बीच भी सामंजस्य उपस्थित किया। रामचरितमानस में बालकाण्ड में संत समाज का जो लम्बा रूपक है वह इस बात को स्पष्ट रूप में सामने लाता है। भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचकर भी लोकपक्ष उन्होंने नहीं छोड़ा। लोकसंग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अंग था। यही कारण है कि इनकी भक्ति रसभरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं। आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है। रामचरितमानस में नाम और रूप दोनों को ईश्वर की उपाधि कहकर वे उन्हें उसकी अभिव्यक्ति मानते हैं-

“नाम रूप दुई ईस उपाधि। अकथ अनादि सुसामझि साधी।

नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी॥”

रचनाकौशल प्रबंध पटुता, सहृदयता इत्यादि सब गुणों का समाहार हमें रामचरितमानस में मिलता है। कथा के मार्मिक स्थलों की पहचान। अधिक विस्तार हमें ऐसे ही प्रसंगों का मिलता है, जो मनुष्य मात्र के हृदय को स्पर्श करने वाले हैं- जैसे जनक की वाटिका में राम-सीता का परस्पर दर्शन, राम वन गमन, दशरथ मरण, भरत की आत्मग्लानि, वन के मार्ग में स्त्री-पुरुषों की सहानुभूति युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति लगना इत्यादि। जिस धूमधाम से मानस की प्रस्तावना चली है, उसे देखते ही ग्रंथ के महत्व को आवास मिल जाता है। उससे साफ झलकता है कि तुलसीदास जी अपने ही तक दृष्टि रखने वाले भक्त न थे संसार को भी दृष्टि फैलाकर देखने वाले भक्त थे। जिस भक्त जगत् के बीच उन्हें भगवान् के रामरूप की कला का दर्शन कराना था पहले चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर अनेक रूपात्मक स्वरूप को उन्होंने सामने रखा है।

राम के प्रामाणिक चरित द्वारा वे जीवन भर बना रहने वाला प्रभाव उत्पन्न करना चाहते थे और काव्यों के समान केवल अल्पस्थायी रसानुभूति मात्र नहीं। सम्पूर्ण विश्व जिस राम की अराधना में लगा हुआ है, वह राम आयोध्या को राजा या राजकुमार नहीं है, मानव का महामानव में परिवर्तन होना एक बहुत बड़े आश्चर्य की बात होती है। राम का जो भव्य और विराट स्वरूप हम सभी के सामने है, वह उन्हें बनवास अवधि से ही प्राप्त हुआ है। प्रतिकलता में अनुकलताएँ खोजना धार के विपरीत तैरकर किनारा प्राप्त करना सर्वस्व त्यागकर कम में ही अपनी भख-प्यास बुझाना संघर्ष में ही अपना आराम देखना, ये अद्भुत व्यक्तित्व ही राम को श्रीराम बनाता है। सन्यासी वेश होना, नग्न पाद, शीत, धूप, बरसात में चलते जाना सामने आये भौतिक सौन्दर्य को तिलाजलि देना चरण में आये हुये को शरण देना जो श्रापित है उनका उद्धार करना, जो उनके दर्शन के इच्छुक है उनकी इच्छाएं शांत करना यह मणि कंचन रूप का व्यक्तित्व महिमामई राम का है, जो उन्हें दण्डक वन से मिला है। इसलिए मैथलीशरण गुप्त ने उन्हें ईश्वर होते हुए भी मानव के रूप में देखा है, और कहा है संदेश यहाँ का नहीं, स्वर्ग का लाया इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया। अपने विराट व्यक्तित्व के माध्यम से राम ने स्वयं में मर्यादा, विनम्रता, अनुशासन, दूसरे का सम्मान और शत्रु का नास, मित्र की रक्षा, जंगल में मंगल यैनी लोकमंगल अपना विशिष्ट ध्येय बनाया, Quarterly international E- Journal

जहाँ सत्य है छल नहीं है, जहाँ प्रेम है, कपट नहीं है जहाँ तप है लालच नहीं है जहाँ बल है पर अहंकार नहीं है, ऐसा व्यक्तित्व ही इस धरती पर रामराज्य ला सकता है। महिमावान श्रीराम दण्डक वन में स्वयं को प्रतिष्ठित कर चुके थे। यही कारण रहा होगा उनके दर्शन के अभिलाषी अनेकों ऋषि-मुनि रहे हैं मातृपति शबरी रही हैं गिद्ध जटायु उनके आने के इंतजार में रहा है। कुछ काल के पश्चात् राम ने चित्रकूट से प्रयाण किया तथा वे अत्रि ऋषि के आश्रम में गये, तो उनका आगमन सुनते ही महामुनि हर्षित हो गये। शरीर पुलकित हो गया, अत्रि जी उठकर दौड़े। उन्हें दौड़े आते देखकर श्री रामजी और भी शीघ्रता से चले आये। दण्डवत् करते हुए ही श्री राम जी को मुनि ने हृदय से लगा लिया और प्रेमाश्रुओं के जल से दोनों जनों को नहला दिया।

“पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि राम आतुर चलि आए।  
करत दंडवत मुनि उर लाए। प्रेम बारि द्रौं जन अन्हवाए।”

श्री राम जी की छबि देखकर मुनि के नेत्र शीतल हो गये। तब वे उनको आदरपूर्वक अपने आश्रम में ले आये। फिर परम शीलवती और विनम्र श्री सीता जी अनसूया जी के चरण पकड़कर उनसे मिली। ऋषि पत्नी के मन में बड़ा सुख हुआ। उन्होंने आशीष देकर सीता जी को पास बैठा लिया। और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाये, जो नित्य नये निर्मल और सुहावने बने रहते हैं। और स्त्रियों के कुछ धर्म बखानकर कहने लगी। जानकी जी ने सुनकर परम सुख पाया और आदरपूर्वक उनके चरणों में सिर नवाया। तब श्री राम जी ने मुनि से कहा आज्ञा ही तो अब दूसरे वन में जाऊँ।

“कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जप।  
परिहरि सकल भरोस रामहि भजहि ते चतुर नरा।”

यह कठिन कलिकाल पापों का खजाना है; इसमें न धर्म है, न ज्ञान है और न योग तथा जप ही है। इसमें तो जो लोग सब भरोसों को छोड़कर श्री राम जी को ही भजते हैं, वे ही चतुर हैं। मुनि के चरण कमलों में सिर नवाकर देवता, मनुष्य और मुनियों के स्वामी श्री राम जी वन को चले। श्रेष्ठ मुनियों के बहुत से समूह उनके साथ हो लिये। हड्डियों का ढेर देखकर श्री रघुनाथ जी को बड़ी दया आयी, उन्होंने मुनियों से पूछा। मुनियों ने कहा-हे स्वामी! आप सर्वदर्शी हैं। जानते हुए भी हमसे कैसे पूछ रहे हैं? राक्षसों के दलों ने सब मुनियों को खा डाला है। ये सब उन्हीं की हड्डियों के ढेर हैं। यह सुनते ही राम के नेत्रों में जल छा गया।

“अस्थि समूह देखि रघुराया, पूछी मुनिन्ह लागि अति दाय।  
निसिचर निकर सकल मुनि, खाये, मुनि रघुवीर नयन जल छाये।”

“निसिचर हीन करउं महि भुज उठाइ पन कीन्ह।  
सकल मुनिन्ह के आश्रममनिह जाई जाई सुख दीन्ह।”

श्री राम भुजा उठाकर प्रण किया कि मैं पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर दूँगा। फिर समस्त मुनियों के आश्रमों में जा जाकर उनको सुख दिया जब सै श्री राम जी ने वहाँ निवास किया तबसे मुनि सुखी हो गये, उनका डर जाता रहा। पर्वत, वन, नदी और तालाब शोभा से छा गये। वे दिनों दिन अधिक सुहावने मालम होने लगे पक्षी और पशुओं के समूह आनन्दित रहते हैं और भौरे मधुर गंजार करते हुए शोभा पर रहे हैं। जहाँ प्रत्यक्ष श्री राम जी वियजमान हैं, उस वन का वर्णन सर्वराज शेष जी भी नहीं कर सकते।

“खग मग वंद अनंदित रहहीं। मधुप मधुर गंजत छबि लहहीं।  
सो बन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रगट रघुवीर बिराजा।”

शर्पणखा नामक रावण की बहन थी, जो नागिन समान भयानक और दृष्ट हृदय की थी। वह एक बार पंचवटी में गई, और दोनों राजकुमारों को देखकर विकल हो गई। शर्पणखा का विवाह प्रस्ताव, दोनों भ्राताओं का विनोद, लक्ष्मण का अविवाहित बतलाया जाना, शर्पणखा का क्रोधित होकर सीता को खाने के लिए दौड़ना और राम के संकेत से लक्ष्मण द्वारा उसका विरूपण और इस प्रकार रावण को युद्ध की चुनौती दी जाना। शर्पणखा विरूपण प्रसंग तो भावी राम-रावण युद्ध की भूमिका है, इस रूप में घटनातत्व का विश्लेषण करते हुए तुलसी लिखते हैं-

“लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिन कीन्हि।  
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि॥”

शर्पणखा रावण से कहती हैं- अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र, जो पुरुषों में सिंह के समान हैं, वन में शिकार खेलने आये हैं। मुझे उनकी करनी ऐसी समझ पड़ी है कि वे पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर देंगे। मेरी पुकार सुनकर खर-दषण सहायता करने आये। पर उन्होंने क्षण भर में सारी सेना को मार डाला खर-दषण और त्रिशिराका वध सुनकर रावण के सारे अंग जल उठे। तुलसी के भक्तिभाव के कारण विशेष रूप से परिवर्तन आ गया है। तुलसी के कथा में सीता के स्थान पर छाया सीता का हरण होता है, और यह भी अपहण नहीं वरन् हरण की लीला के बहाने पृथ्वी का बोझ उतारने का उपाय होता है और रावण भी सीता का हरण नहीं करता वरन अपनी मुक्ति के लिए सरल उपाय करता है, क्योंकि उसे आभास हो गया है कि खर-दषण को कारने वाला और कोई नहीं स्वयं ईश्वर है। और सिर्फ इतना ही नहीं राम जब सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण को छोड़ गये और जब लक्ष्मण माया रूपी मारीच की आवाज और सीता के मर्मभेदी वचन सुनकर भी वे सीता को अकेला छोड़ जाने के लिए तत्पर नहीं हुए तो भगवान राम को सीता हरण आयोजन के लिए लक्ष्मण के मन को बदलना पड़ा। उस प्रसंग में तुलसी के मर्यादावाद ने वाल्मीकि के समान लक्ष्मण और सीता में वाद-विवाद न करवाकर उस समस्त वार्तालाप को ‘मरम वचन’ की पिटारी में रखकर संक्षिप्त कर दिया है।

“सीता परम रूचिर मग देखा। अंग अंग समनोहर वेषा।  
सुनहु देव रघुवीर कृपाला। एहि मग कर अति सुंदर छाला॥”

\$\$\$\$

“क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ  
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥”

श्री राम जी शबरी के आश्रम में पधारे। शबरी ने श्री राम को घर में आये देखा, तब मुनि मतंग जी के वचनों को याद करके उनका मन प्रसन्न हो गया। कमल-सदृश नेत्र और विशाल भुजावाले सिरपर जटाओं का मुमुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुन्दर सांवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरी जी लिपट पड़ी।

“प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पनि पनि पद सरोज सिर नावा।  
सादर जल लै चरन परवारो। पनि सुन्दर आसन बैठारो॥”

\$\$\$\$

“कंद भूल फल सुरस अति दिए राम कहँ आनि।  
प्रेम सहित प्रभुं खाए वारंवार बखानि॥”

शबरी ने कहा हे रघुनाथ जी आप पंपा नामक सरोवर को जाइए, वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी। इस प्रकार दण्डवन में श्री राम जी का समय गुजरता गया और सीता की खोज में आगे बढ़ते हैं। प्रेम और श्रद्धा अर्थात् पूज्यवद्धि दोनों के मेल से भक्ति की निष्पत्ति होती है। श्रद्धा धर्म की अनुगांमिनी है। जहाँ धर्म का स्फुरण दिखाई पड़ता है वहीं श्रद्धा टिकती है। धर्म ब्रह्म के सत्य स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति है, उस स्वरूप की क्रियात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका आभास अखिल विश्व की स्थिति में मिलता है।

“रामराज भयो काज सगुन सुभ, राजा राम जगत विजई है।  
स्मरय पड़ो सुजान सुसाहब, सुकृत सेन हारत जितई है॥”

अवधपुर, जनकपुर, चित्रकूट के राम में जो एक साम्य है, इन सबका योग दण्डक वन के राम में है।

\*\*\*\*\*

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 570
2. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 574
3. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 577
4. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 585
5. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 589
6. श्री रामचरितमानस, तुलसीदास, पृष्ठ 599
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 122
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 115
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 117